سلام

م۔ر۔عابد

بندگی کے شجر خوب پھلتے رہے
حریت کے مقدر ٹہلتے رہے
بے زبانی سے نطق بشر کا سفر
حمد کے سکے ہر راہ چلتے رہے
سنگریزوں کی تہذیب، نظم جہاں
حق نمائی کے دیپک یہ جلتے رہے
شام ہنستی رہی، دن سسکتا رہا
نور کے آئینے ہاتھ ملتے رہے
شکر کے سجدے عالم پہ چھاتے رہے
مطمئن دائرے جن میں پلتے رہے
تشنگی سے ہی بچے بہلتے رہے
حق پرستی کے لمحات ڈھلتے رہے
شمع بجھ کر بھی نور وفا دے گئی
جانثاری کے جذبے مچلتے رہے
سوکھی تپتی زمیں تشنگی بوگئی
کوہساروں سے چشمے ابلتے رہے
جراتوں کے تھے سر نیزوں سے اونچے ہیں
دھوپ میں حق نما لاشے جلتے رہے
حرملہ کا نشانہ خطا کر گیا
ہاتھ جور و جفا کے دہلتے رہے
عزت نفس تھی جو رسن میں بندھی
ظلم کے تانے بانے کسلتے رہے
چاند سورج کو تقدیریں جو دے گئے
ان کے دل سے پھپھولے ابلتے رہے
کربلا تیری مظلومیت کب گئی
نام لیوا ترے تجھ سے ٹلتے رہے

सलाम

भक्ति के पौधे संकट में फलते रहे,
भाग्य स्वाधीनता के टहलते रहे।
'चुप' से मानव के बोलों का चलता विकास,
'धन्य' से सिक्के हर ओर चलते रहे।
रेत कन्कर का जमघट, जगत का चलन,
सत्य-दर्शन के दीपक ये जलते रहे।
सांझ हंस्ती रही, दिन सिसकता रहा,
यूँ उजालों के दर्पण मसलते रहे।
धन्य के दण्डवत जग पे छाते रहे,
जिनमें सन्तोषी परकार पलते रहे।
प्यास से बच्चे करबल में बहले रहे,
सत्य की साध के पल भी ढलते रहे।
दीप बुझकर भी निष्ठा की लौ दे गया,
यूँ परित्याग के भाव फलते रहे।
सूखी तपती धरा प्यास को बो गयी,
ऊँचे पर्वत से सोते उबलते रहे।
बरछियों से उठे साहसों के ये सर,
धूप में सत्य के शव थे जलते रहे।
हुर्मुला का निशाना बहक ही गया,
हाथ दुष्कर्म के सब दहलते रहे।
चाँद सूरज को जो भाग्य शुभ दे गये,
उनके दिल से फफोले उबलते रहे।
यूँ तो रस्सी में जकड़ा गया स्वाभिमान,
फिर अनर्थता के फन्दे कसलते रहे।
कर्बला तेरे दुख की खटक कब गयी,
नाम लेवा तेरे तुझ से टलते रहे।